इस्लामी अक़ाइद

28

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं। हम उसी का शुक्र अदा करते हैं और उसी से मदद और माफ़ी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि पर।

व बअद!

इस्लाम दीने फ़ितरते है। इसके बतलाए अक़ाइद व आमाल में कोई पेची दगी नहीं बल्कि हर चीज़ का बयान साफ़-साफ़ है। इस्लाम में सबसे ज़्यादा अहमियत अक़ीदे को हासिल है। जो हैसियत दिल की इन्सानी जिस्म में है वही हैसियत इस्लाम में अक़ीदे की है। दुनिया और आख़िरत की कामयाबी का दारो-मदार अक़ीदे पर ही है। इर्शादे बारी तआला है '' बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया। उनकी मिसाल उस सराब (मरीचिका) की सी है जो चटियल मैदान में होती है या प्यासा इन्सान उसे पानी समझता है लेकिन जब उसके पास पहुंचता है तो कुछ नहीं पाता।'' (नूर-आयत-39)

अक़ीदा ए तौहीद ही पर दीन की इमारत क़ायम है। कुरआन व अहादीस में इसे साफ़ तौर पर बयान भी किया गया है। यहीं से सहाबा किराम रज़ि. और ताबईन रह. ने अपने अक़ीदे व अमल की इस्लाह की। इन्सान की इबादात (आमाल) अल्लाह तआला तभी कुबूल करेगा जब उसका अक़ीदा सही होगा। अगर किसी शख़्स का अक़ीदा सही नहीं तो उस के सारे आमाल ज़ाया और बेकार है। अल्लाह के पास उनकी कोई हैसियत नहीं। इसलिए कि ''जिस किसी ने ईमान की राह पर चलने से इन्कार किया तो उसके सारे आमाल बर्बाद हो गये और ऐसा शख़्स आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों में होगा। (माईदा-आयत-5) आम आदमी की तो बात ही क्या अल्लाह ने तो आप सल्ल. से ख़िताब करते हुए फ़रमाया '' तुम्हारी तरफ़ और तुम से पहले हो गुज़रे सभी नबियों की तरफ़ यह वह्य भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारे आमाल ज़ाया (बर्बाद) हो जायेंगे और तुम नुक़्सान उठाने वालों में रहोगे।'' (ज़ुमर आयत-65)

दीन (मज़हब) सिर्फ़ इस्लाम है।'' (आले इम्रान-आयत-19) और ''जो कोई इस्लाम के सिवा कोई और दीन लेकर अल्लाह के पास जायेगा तो अल्लाह उस दीन को कुबुल नहीं करेगा और ऐसा शख़्स आख़िरत में नुक़्सान में रहेगा। (आले इम्रान-आयत-85)

क्योंकि अल्लाह ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर यह आयत नाज़िल फ़रमाई ''आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल (पूरा) कर दिया। अपनी नैमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पसन्द करके राज़ी हुआ। (माईदा-आयत-03) दीने इस्लाम जिसे अल्लाह ने पसन्द किया और जो नबी सल्ल. पर पूरा हुआ। जिस पर अमल करके सहाबा किराम रज़ि. अल्लाह से राज़ी हुए और उनके दीने इस्लाम पर चलने से अल्लाह उन से राज़ी हुआ।

कुराने करीम और सही अहादीसे रसूल सल्ल. से जो इस्लामी अक़ीदा हमें मिलता है वह यह है कि अल्लाह तआला पर और उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और

और यह कि ''अल्लाह ही को पुकारो! अपने दीन को उसके लिए ख़ालिस करके। चाहे तुम्हारा यह अमल काफ़िरों (इन्कारियों) को कितना ही बुरा लगे।'' (ग़ाफ़िर–आयत–14) मआज़ रज़ि. रावी है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''अल्लाह तआला का बन्दों पर यह हक़ है कि वह सिर्फ़ उसी की इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराये।'' (बुख़ारी–मुस्लिम)

इस्लाम के 5 ज़ाहिरी अरकान यानि (1) इस बात का इक़रार कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के रसूल है। (2) नमाज़ क़ायम करना। (3) जक़ात देना (4) रमज़ान के रोज़े रखना और (5) साहिबे इस्तेताअत के लिए (अल्लाह के घर का) हज करना। इनके अलावा दूसरे फ़राइज़ जो शरीयत से साबित हैं सब पर ईमान लाना भी ईमान बिल्लाह में दाखि़ल हैं। यक़ीनन मअबूदे हक़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह है '' इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और वो सब बातिल है जिन्हें लोग अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं।'' (हज़–आयत–62)

अल्लाह तआला के अस्मा (नाम) और सिफ़ात (गुणों) पर ईमान लाना (बग़ैर उनमें तहरीफ़ किये या उन की हालत को तय किये या उनको किसी से भी मिसाल देकर) अल्लाह पर ईमान लाना है। जैसा कि इर्शादे बारी तआला है ''कायनात की कोई चीज़ उसकी मिस्ल (जैसी) नहीं और वह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है।'' (शूरा–आयत–11) और ''पस अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। '' (नहल–आयत–74) ध्यान रहे कि अल्लाह का सुनना, देखना और जानना वैसा ही है जैसी उसकी शान है। अहले सुन्नत वल जमाअत का यही अक़ीदा है। सहाबा किराम रज़ि. और ताबईन रह. का भी यही अक़ीदा रहा है। इमाम औज़ाई इमाम ज़हरी, इमाम मकहूल, इमाम मालिक, लीस बिन सअद और सुफ़आन सौरी रह. का अल्लाह तआला की सिफ़ात (गुणों) के बारे में नाज़िल हुई आयात के बारे में कहना है कि इन्हें ''बग़ैर कैफ़ियत (हालत) जानने की जुस्तुजू (कोशिश) के ''जिस तरह बयान हुई है। उसी तरह तस्लीम करना (मानना) चाहिये। इमाम औज़ाई रह. का बयान है कि ''हमारे बीच बड़ी तादाद में ताबईन हज़रात मौजूद थे और हम कहा करते थे कि 'अल्लाह अर्श पर है' और सिफ़ाते इलाही के बारे में वारिद अहादीसे रसूल सल्ल. पर भी हम ईमान रखते थे।'' इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह. का क़ौल है ''हम अपने रब को इस हैसियत से जानते हैं कि वह अपनी मख़लूक़ से अलग आसमानों के ऊपर अर्श पर है।''ईमान क़ौल (कथन) और अमल के मजमू ए का नाम है जो इताअत और फ़रमाबरदारी से बढ़ता है और गुनाह व नाफ़रमानी से घटता है। कुफ़्र औ शिर्क से कम तर किसी भी गुनाह जैसे–ज़िना, चौरी, सूद खौरी, शराब नोशी, नशेबाज़ी और वाल्दैन की नाफ़रमानी वग़ैरह की वजह से किसी की तक्फ़ीर जाइज़ नहीं जब तक कि वह उन्हें हलाल न समझ लें। इसलिए कि ''अल्लाह शिर्क को माफ़ नहीं करता। अलबत्ता उसके सिवा दूसरे गुनाह जिसके लिए चाहता हैं, माफ़ कर देता है।'' (निसा–आयत–48)

आखि़रकार ''हर वह शख़्स जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाखि़ल कर दिया जायेगा। जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा।'' (लुलु वल मरजान–119, बुख़ारी–44)

आख़िरत के दिन पर ईमान लाया जाए और अच्छी या बुरी तक़दीर अल्लाह की तरफ़ से है इस बात का (यक़ीन) लाना जरूरी है। इर्शादे बारी तआला है '' ऐ लोगों जो ईमान लाए हो–ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके रसूल (सल्ल.) पर उस किताब पर जिसे अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल किया है और उन किताबों पर जिन्हें वह पहले उतार चुका है। जिसने अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आख़िरत के दिन (प्रलय) से कुफ़्र (इन्कार) किया। वह गुमराही में भटक कर बहुत दूर निकल गया।'' (निसा–आयत–136)

सही मुस्लिम की पहली हदीस जिसके रावी उमर रज़ि. हैं–में है कि जिब्राईल अलैहि. ने अल्लाह के रसूल सल्ल. से ईमान के बारे में सवाल किया तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''ईमान यह है कि तुम ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और क़यामत के दिन पर और इस बात पर कि अच्छी बुरी तक़दीर अल्लाह की तरफ़ से है।'' इनके अलावा वोह सब बातें जिन पर ईमान लाना ज़रूरी है, वो सब इन्हीं 6 बातों की शाखें हैं। यही रिवायत अबु हुरैरा रज़ि. से बुख़ारी हदीस न. 50 पर भी दर्ज है।

(1) अल्लाह पर ईमान लाना

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। यही अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब है। इसलिए कि अल्लाह ही बन्दों को पैदा करने वाला, उनके साथ भलाई करने वाला, उन्हें रोज़ी देने वाला उनके खुले और छिपे का जानकर, अपने फ़रमाबरदारों को जज़ा और नाफ़रमानों को सज़ा देने वाला है। ''उसने जिन्नों व इन्सानों को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया है कि वोह उसी की इबादत करें।'' (ज़ारियात–आयत–56) और इर्शाद फ़रमाया ''ऐ लोगों! इबादत करो। अपने उस रब की जो तुम्हारा और तुमसे पहले हो गुज़रे लोगों का पैदा करने वाला है। वही तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन का फ़र्श बिछाया, आसमान की छत बनाई, ऊपर से पानी बरसाया और उसके ज़रिये से हर तरह की पैदावार निकाल कर तुम्हें रिज़्क पहुंचाया। अब तो न बनाओ अल्लाह के बराबर किसी और को और तुम जानते भी हो।'' (बक़रा–आयत–21–22) इसी बात की तालीम देने और इससे उलट (खिलाफ़) बातों से डराने के लिए अल्लाह ने अपने रसूल भेजे और किताबें नाज़िल की। फ़रमाया ''हमने हर उम्मत में रसूल भेजे और किताबें नाज़िल की। फरमाया '' हमने हर उम्मत में रसूल भेजा (और उसके ज़रिये सब को ख़बरदार किया) कि अल्लाह ही की इबादत करो और तागूत (अल्लाह के अलावा) की पूजा (इबादत) से बचो।'' (नहल–आयत–36) इसी तरह यह कि ''हमने तुमसे पहले जो भी रसूल भेजा है उसे यही वहय की कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। पस तुम मेरी ही इबादत करो।'' (अम्बिया–आयत–25) इबादत की हक़ीक़त यह है कि इबादात के वो सारे तरीक़े जिनके ज़रिये से लोग इबादत करते आये हैं जैसे–दुआ व फ़रियाद करना, मदद व पनाह मांगना, रोज़ा रखना, नमाज़ पढ़ना, नज़रो–नियाज देना, कुर्बानी करना, रूकू, सज्दा और क़याम करना वग़ैरह को मुहब्बत, आजिज़ी व इन्कसारी और ख़ौफ़ व उम्मीद के जज़्बे के साथ ख़ालिस अल्लाह के लिए किया जाए। जैसा कि इर्शादे बारी तआला है'' तुम अल्लाह ही की बन्दगी करो। दीन को उसी के लिए ख़ालिस कर के।'' (ज़ुमर–आयत–01)

ईमान बिल्लाह में यह बात भी शामिल है कि (किसी से) सिर्फ़ अल्लाह के लिए मुहब्बत की जाए और उसी के लिए किसी से नफरत की जाए। यानि दोस्ती या दुश्मनी सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो। एक सच्चा मोमिन ईमान वालों को दोस्त रखता है और ईमान का इन्कार करने वालों से बैर रखता है। इस उम्मत के मोमिनों में सरे फ़हरिस्त सहाबा किराम रज़ि. हैं। अहले सुन्नत व जमाअत उन से मुहब्बत रखते हैं, उन्हें दिल से चाहते हैं और इस बात का यक़ीन रखते हैं कि वो अम्बिया के बाद सब से बेहतर इन्सान है। नबी सल्ल. का इर्शाद है "सब से बेहतर मेरे ज़माने के लोग (सहाबा) हैं। फिर उसके बाद जो लोग होंगे और फिर उनके बाद जो लोग होंगे।" (बुख़ारी–2652, मुस्लिम–6719, तिर्मिज़ी–2028–29)

अहले सुन्नत व जमाअत सहाबा किराम में सबसे अफ़ज़ल हज़रत अबु बकर रज़ि. को मानते हैं। फिर उन के बाद उमर रज़ि. फिर उसमान रज़ि. फिर अली रज़ि. को और फिर बक़िया अशरा–मुबश्शरा को। उनके बाद अहले बदर और बैते रिज़वान वालों को और उनके बाद सभी सहाबा किराम रज़ि. को। अहले बैत से मुहब्बत रखते हैं। नबी सल्ल. की सभी बीवियों से ताज़ीम और एहतेराम के जज़्बे के साथ मुहब्बत रखते हैं और उन्हें सभी मोमिनों की मां ए मानते है और उन सब के लिए अल्लाह की रज़ा चाहते हैं। अल्लाह पर ईमान लाने में यह भी शामिल है कि यह अक़ीदा रखा जाए कि " क़यामत कब क़ायम होगी? का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है। बारिश भी वहीं नाज़िल करता है। मां के पेट में बच्चे की हर हालत को अल्लाह ही जानता है। कोई नहीं जानता कि वह कल क्या अमल करेगा और किसी जान को यह भी नहीं मालूम कि किस जगह उसे मौत आएगी।" (लुक़मान–आयत–34)

(2.) फ़रिश्तों पर ईमान लाना

हर मोमिन को इस बात का यक़ीन रखना चाहिये कि अल्लाह के फ़रिश्ते हैं जो नूर से पैदा किये गये हैं। अल्लाह ने उन्हें अपनी इताअत और फ़रमाबरदारी के लिए वुजूद बख़्शा है। (वो गुनाहों से) मासूम हैं और किसी बात में अल्लाह के हुक्म की ना फ़रमानी नहीं करतें। इर्शादे बारी तआला है" वो किसी की सिफ़ारिश नहीं करते सिवाए उनके जिनके हक़ में सिफ़ारिश सुनने को अल्लाह राज़ी हो और वो अल्लाह से डरते रहते है" (अम्बिया–आयत–28)

ऐ ईमान वालों अपने आपको और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ इसका ईधन इंसान और पत्थर होंगे। इस आग पर ऐसे कठोर और सख़्त मिज़ाज फरिश्ते मुकर्रर है जो अल्लाह के किसी हुक्म की ना फरमानी नहीं करते और जो हुक्म उन्हें मिलता है उसे बजा लाते है। (तहरीम आयत–6)

उनके अलग–अलग दर्जात हैं। कुछ तो अर्श इलाही को उठाये हुए हैं, कुछ जन्नत व जहन्नम की निगरानी कर रहें हैं और कुछ बन्दों (लोगों) के आमाल लिखने में मसरूफ़ हैं। कुछ के नाम हमें मालूम हैं–जैसे जिबराईल अलैहि., मिकाइल अलैहि. इज़राईल अलैहि. इस्राफ़ील अलैहि. और मालिक (दरोग़ा ए जहन्नम) वग़ैरह।

(3) आसमानी किताबों पर ईमान लाना

दीने हक़ की तालीम देने और उसे लोगों तक पहुंचाने के लिए अल्लाह ने अपने रसूलों पर किताबें नाज़िल की। जैसा कि इर्शादे बारी तआला है "हमने अपने रसूलों को

साफ़ (खुली) निशानियों और हिदायत के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ान (तराज़ू) उतारी ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों।'' (हदीद–आयत–25)
जो फ़रमाबरदारों को खुश ख़बरी देने और ना फ़रमानों को डराने वाली थे और उनके साथ कितबा नाज़िल की ताकि हक़ के बारे में लोग के बीच जो इख़्तिलाफ़ पैदा हो गये, उनका फ़ैसला करें।'' (बक़रा–आयत–213)

एक मोमिन के लिए तौरात ज़बूर, इन्जील, सहीफ़े इब्राहीमी और क़ुरआने करीम सब पर ईमान लाना ज़रूरी है। इर्शादे बारी तआला है ''यह क़ुरआन एक बा बरकत किताब है। जिसे हमने नाज़िल किया है। पस तुम इस की पैरवी करो और अल्लाह से डरते रहो। ताकि तुम पर रहम किया जाए।'' (अनआम–आयत–155) और यह कि ''हमने यह किताब (क़ुरआन) आप पर नाज़िल की है। जो हर चीज़ को साफ़–साफ़ बयान करने वाली है। और हिदायत, रहमत और खुश ख़बरी है उन लोगों के लिए जो मुस्लिम (फरमा बरदार) हैं।'' (नहल–आयत–89)

(4) रसूलों पर ईमान लाना

रसूलों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि अल्लाह ने अपने बन्दों को डराने, खुश ख़बरी देने और उन्हें दीने हक़ की तरफ़ बुलाने के लिए अपने रसलू भेजे। बस जिसने उन की बात मानी वो खुशनसीब और जिन्होंने इन्कार किया वोह नाकाम हुए का यक़ीन हो और यह भी कि इन सब रसूलों में सबसे अफ़ज़ल और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लललाहु अलैहि वसल्लम हैं। इर्शादे बारी तआला है'' हमने हर उम्मत में रसूल भेजा और उस के ज़रिये से लोगों को ख़बरदार किया कि अल्लाह ही की इबादत करो और तागूत की इबादत (पूजा) से बचो।'' (नहल–आयत–36)
इन अम्बिया और रसूलों में से अल्लाह ने जिन के नाम बतायें हैं या अल्लाह के रसूल सल्ल. से जिनके नाम मालूम हुए सब को अल्लाह का नबी दिल से तस्लीम करे। जैसे–आदम, नूह, इब्राहीम, लूत, इसहाक़, इस्माईल, शोएब, याक़ूब, युसुफ, युनुस, दाऊद, सालेह, हुद, मूसा और ईसा अलैहिस्सलाम।

(5) यौमे आख़िरत (क़यामत के दिन) पर ईमान लाना

मौत के बाद पेश आने वाली तमाम ग़ैबी (छिपी) बातों पर जिनकी अल्लाह ने और उसके रसूल सल्ल. ने ख़बर दी है, यक़ीन रखना यौमे आख़िरत पर ईमान लाना है जैसे क़ब्र की आजमाइश उसका अज़ाब और आराम, क़यामत के दिन की हौल नाकियां, घबराहट और परेशानियां, पुल सिरात, मीज़ान (तराज़ू) हिसाब–किताब, जज़ा और सज़ा और लोगों को उनका नामा ए आमाल दिया जाना। कुछ का उन्हें दाहिने हाथ में लेना और कुछ का बाएं हाथ में या पीठ के पीछे से लेना। हौज़े कौसर और जन्नत व जहन्नम पर यक़ीन रखना अहले ईमान का अपने रब (अल्लाह) का दीदार करना और अल्लाह का उनसे बात करना। इसी तरह क़ुरआन और सही हदीसों से जो बातें क़यामत के बारे में साबित हैं, सब पर यक़ीन रखना ''यौमे आख़िरत'' पर ईमान लाना है।

(6) तक़दीर पर ईमान लाना

जो कुछ हो चुका और जो होने वाला है इस सब का इल्म अल्लाह को है। वह अपने बन्दों के सब हालात जानता है। उनके रिज़्क़ उम्र और उनके सारे आमाल का उसे पूरा–पूरा पता है। कायनात में कोई चीज़ उस से छिपी हुई नहीं। इसलिए की ''अल्लाह

हर चीज़ का इल्म रखता है। (तौबा–आयत–115)
और यह कि "वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। उस का इल्म हर चीज़ को (अपने) घेरे में लिये हुए है।" (तलाक–आयत–12)
इसके अलावा यह कि अल्लाह ने जो कुछ करने का फैसला किया है और जो कुछ (बन्दो की) तकदीर में लिखा है सब लोहें महफूज में लिख दिया है। दुनिया में वहीं कुछ हुआ है जिसे अल्लाह ने चाहा और जो अल्लाह ने नहीं चाहा वो नहीं हुआ है। इसलिए कि "अल्लाह करता है जो कुछ चाहता है।" (हज–आयत–18)
वह जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसका काम बस इतना है के उसे हुक्म दे कि हो जा और वो हो जाता है। (यासीन आयत–82) तुम्हारे चाहने से कुछ नहीं होता जब तक कि अल्लाह न चाहे (तकवीर आयत–29) अल्लाह ही हर एक का ख़ालिक और हर एक पर निगह बान है। (जुमर आयत 62) लोगो अल्लाह के तुम पर जो अहसानात है उन्हे याद रखों। क्या अल्लाह के सिवा कोई ओर भी खालिक (पैदा करने वाला) है जो तुम्हे आसमान व ज़मीन से रिज़्क देता है। कोई मअबूद उसके अलावा नहीं। आखिर तुम कहां से धोखा खा रहे हो? (फातिर आयत–3)

निजात पाने वाली जमाअत का अक़ीदा

पीछे बयान हुई तमाम बातों पर यकीन रखना यानि ईमान लाना ही सही इस्लामी अकीदा है। यही सहाबा किराम रजि. और ताबईन रह. और अहले सुन्नत वल जमात का अकीदा है। नबी सल्ल. का इर्शाद है–

1. मेरी उम्मत में एक गिरोह हमेशा हक़ पर कायम रहेगा। उसे अल्लाह की मदद हासिल होगी। लोग उनका साथ छोड़कर उन्हे कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकेगें। यहां तक कि अल्लाह का हुक्म (कयामत) आ जायेगी। (बुखारी–3640–41 व मुस्लिम 5246–47 व तिर्मिजी 2036)

2. यहूद 71 फिर्को में बंटे और नसारा (ईसाई) 72 फिर्को में तक्सीम हो गये और मेरी उम्मत 73 फिर्को में बंट जायेगी। सबके सब जहन्नमी होंगे सिवाय एक गिरोह के। सहाबा रजि. ने अर्ज किया वह कौनसा फिर्का होगा? ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल. तो आप सल्ल. ने फरमाया वह जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीके पर होगा। (अबुदाउद 4519–20 व इब्नेमाजा 3992 व तिर्मिजी 2028–29)

इसलिए हमे चाहिए कि हम उस एक जन्नती गिरोह को तलाशें। फिर उस गिरोह के अकीदे व अमल पर जम जाये। अल्लाह हमारी मदद और इस्लाह फरमाये। हमें दीने हक़ की सही समझ अता करे और कुरआन व सही अहादीसे रसूल सल्ल. के मुताबिक जिन्दगी गुजारने की तौफिक अता करे और हम सभी को नेकी और तकवे की राह में एक दूसरे की मदद करने की तौफिक दे। आमीन

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद
Email : saeed.tonk@gmail.com
मो.09887239649, 09214836639